B.L.D.E. Association's

S. B. Arts & K.C.P. Science College,
VIJAYAPUR- 586 103.

ASSIGNMENT

For B.A./ B.Sc. IV Semester

2016 - 2017

Name of the Student Anil. Rathod

Roll No. 40 R.C.U. Seat No. A1549013

Subject Hindi optional

Assignment No.	Date	Marks Assigned	Marks Obtained	Name and Signature of Teacher	Remarks
1	22/3/17	03	03	Dr. S.P. Merwade	.
2					
3					
4					

Scanned by CamScanner

मैथलिशरण गुप्त द्वारा लिखीत मनुष्यता कविता में व्यक्त कवि के विचारों पर चर्चा किजीए :-

कवि परिचय : नाम - मैथिलीशरण गुप्त
गाँव - उत्तर प्रदेश के चिरगाँव
जन्म - 1886
मृत्यु - 1964
कविता - रंग में भंग, भारत - भारती।

मैथलीशरण गुप्त कहते हैं। इसबात का अच्छी तरह से विचार करो की तूम आज या कल मरनेवाले हि है क्योंकी तूम्हे मृत्यु निश्चित है। तूम अमर नही हो। इसलिए मौत कभी भी इसे मत मरना तो हि है। लेकिन ऐसा मरो की सभी याद कर सके। तूम्हारे मृत्यु पर लाखो - करोडो लोग प्रेम से आँसु बहा सकते हैं। जो मनुष्य अपने लिए अपने स्वर्थ के लिए जिवन बिताता है। जिवीत होते हुवे भी मृत्यु के समान दिखाई देता है। जो मनुष्य अपने लिए जिता है। वह केवल पशु की तरह दिखाई देता है। जो मनुष्य। जो मनुष्य दूसरो के लिए कार्य करता मरता है। उसके मृत्यु के बाद भी वह मनुष्य केहलाते हैं। मैथलीशरण गुप्त जी ने उसी मानव के यहि उदारता की कथा इस कविता में बतायी गयी है। उसी उदारता की धरती हमेशा सजिव कीर्ती धरती पर गुंज उठाती है। ऐसा व्यक्ती को सारी सृष्टी उसी उदार व्यक्ती को पुजती रहती है। इस प्रकार यह अंखड प्रेम का भाव विस्व पर निर्माण कर सकेंगे वही मनुष्य है। जो अन्य मनुष्य के लिए मरे। मनुष्य को दूसरो के प्रती सहानुभूति चाहिए तबी वह महान सुभुति सकता है। स्वँयं सभी विस्व को अपने वश मे कर सकता है। भगवान गौतम बुध्द के खिलाफ जो लोग थे उनका देश भाव गौतम बुध्द के दया प्रहावमें भेह गये हैं।

मनुष्य को दूसरों के प्रति सहानभुती रहना चाहिए। तबी वह महान सुभुती कर सकता है। स्वंयम सभी विस्व को अपने वश मे बना सकता है।

जिसकी पीठ हमारी ओर है और अपने घर की ओर जा रहा है। तो उसे रोका नही जा सकता उसे जाने दिया जा सकता। अगर वो हमारी ओर देखेगा तो अपने परिवार से नहि मिल पायेगा अगर उसका मुहँ हमारी ओर होता तो भी वो हमारी लिए अनजान व्यक्ति हि रहता। घर उसकी परिवार के तरफ अगर उसका मुहँ घर की तरफ रहेगा तो उसके परिवारवालों को अतीयता से देख सकता है। जिसके साथ सम्बंधो का इतिहास होगा और होर होगी प्रतिक्षा करती रमा की एक सम्पूर्ण अनजान कथा।

दिनभर काम करके, मेहनथ करके दो पैसे कमाता है और घर जाते समय अपने बच्चों के लिए खाने के लिए चुसमूरा लेकर जल्दी -जल्दी जाने का प्रयास करता है। और खिलौने लेकर और निशचित अपने बिबि के लिए कुछ लेकर जाता है। घर जाने के लिए वो इतना उत्सुक है की सुर्य भी घरती नाप नहि सकता। दिनभर अपने बच्चो और बच्चों की मा से दूर रहकर पुरि मिलने के खुशि हि कुछ और होति है। कुछलोग होते है कमाते है दो रूपाया तो सब कुछ पिजाते है। और कुछ लोग अपने परिवार के बारे मे सोचते है।

6/10

लिखावट [illegible] मे सुधार होना।
व्याकरण की ओर ध्यान देना।